बेहद बहुत मेहनत करती है। यह बाबा का वर्ल्ड डेड है। देख-देख करना है। बाप करनकरावनहार है तो बच्चे भी है। खुद भी करेंगी तो दूसरों से भी करवायेंगी। बाप भी खुद भी करते है। बच्चों से भी करवाते है। भक्ति मार्ग में तो करनकरावनहार का अर्थ जरा भी समझते नही है। यह बच्चे और बच्चियाँ समझते है कि हम अब बहुत समझदार बन रहे है। जैसे साईंस है उससे भी कितने समझदार बनते है। यह समझ है ना। अनेक प्रकार की समझ है। बाप फिर नई बात समझाते है। दुनियाँ की समझानी अलग, बाप की समझानी अलग है। बच्चे जानते है किसम 2 जन्मों का सुख प्राप्त करते है। बाप को ही पतित पावन कहते है। ऐसे ही बाप को याद करते है कहते है कि आप ही पतित पावन आओ। परन्तु किसी-2 यह समझते नही है। पतित पावन भला कैसे आकर पावन बनावेंगे। बिगर शरीर तो वो मनमनाभव भी नही कह सकेंगे। खुद ही आकर समझाता हूँ कि मैं ही पतित पावन हूँ। मैं साकार दवारा आकर समझाता हूँ कि तुम पतित से पावन कैसे बनेंगे। सब बच्चों को कहते है कि मामेकम् याद करो। आत्मा को शरीर दवारा ही पार्ट बजाना है। इसलिये आत्म-अभिमानी बनना पड़े। बाप के बीजरूप होने कारण उनमें रचता और रचना की सारी आद मध्य अन्त का ज्ञान है। आत्मा बताते है कि मैं भी सुप्रीम आत्मा हूँ। तुम भी आत्मायें सुनती हो। देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह तो हर एक जानते है कि भगवान परमधाम में रहते है। जब पावन नही बने तब तक कोई भी वहाँ पर जा सकती नही है। वो कहते है कि वेद शास्त्र आद पढ़ने से भगवान को पाने का रास्ता मिलता है। यह नही समझते है कि आत्मा पतित है वो पावन बनने पर ही जा सकेगी। तुम मास्टर पतित पावन हो। पतितों को पावन बनने का रास्ता बताने वाले हो। बाप भी रास्ता बताते है ना। हर एक को पुरुषार्थ करना पड़ता है। सतयुग को पावन कलयुग को पतित कहते है। परन्तु कैसे पावन बनता है वो तो तुम्ही जानते हो। बाप कहते है मुझे याद करने पर तुम विष्णु पुरी का मालिक बनेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप भी शरीर दवारा राय देते है। राय पर चलने का ही सभी मनुष्य मात्र पुरुषार्थ करते है। मनुष्यों को राय देते है कि पावन कैसे बनना है। यह है बाप का पार्ट। सो उनको पार्ट जरूर बजाना है। इसमें तो कृपा वा आशीर्वाद की बात ही नही। बाप तो बन्धा हुआ है बच्चों को पावन बनाने के लिये। यह पार्ट जरूर बजाना है। कृपा वा रहम आद की बात ही नही। मनुष्य परमात्मा को पता नही कि क्या-2 समझते है। बाप तो कहते है कि मेरा पार्ट तो बिलकुल ही सिम्पल है। मनमनाभव कहने का भी मेरा ही पार्ट है। जैसे तुम आत्माओं का पार्ट है। वैसे ही मैं परमपिता परमात्मा भी पार्ट बजाता हूँ। यह पार्ट बजाते है राजाई का। प्रजा का पार्ट बजाती है। इसमें फिर नई नवाई क्या है। मैं हाथ पाँव थू-2 चलते है तो सो भी ड्रामा अनुसार। बच्चों को पुरुषार्थ करवा रहा हूँ। ना चाहते हुये भी बन्धा हुआ हूँ। टीचर का फर्ज है पढ़ाना। बन्धा हुआ हूँ पढ़ाने लिये। बच्चे भी बन्धे हुये है पढ़ने के लिये। है तो ड्रामा ही ना। ऐसे नही कि ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ होगा। नही। पुरुषार्थ तो करना ही है। यह बातें भी बाप समझा कर फिर कह देते है कि मुख्य मंजिल है फिर भी बाप की ही यात्रा की। बाकी यह चक्र सारा बुद्धी में रखो। यह भी बच्चे समझ गये है कि ब्राह्मण ही त्रिकालदर्शी बनते है। तुम बच्चों की बुद्धी में है कि आदि में है सतयुग मध्य में फिर रावण राज्य भक्ति मार्ग शुरू होता है। यह भी अब तुम बच्चों की बुद्धी में है। उठते बैठते चलते तुम त्रिकालदर्शी हो। समझते हो समझा सकते हो। यह पार्ट है मुख्य। हम त्रिकालदर्शी है। व त्रिमूर्ती हम नही है। ऐसे भी नही कि भगवान त्रिमूर्ती है। नही भगवान की तो यह त्रिमूर्ती ब्र, वि, शं रचना है। ऐसे भी नही है कि इनको रचते है। नही। ब्रह्मा विष्णु शंकर का तो सूक्ष्म वतन में पार्ट है। वो रचना है सा० करते है। ज्ञान देते हैं। यह सूक्ष्म वतन में हैं। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी

[illegible]

नहीं समझते है। तुम्ही ——
यह भी समझते हो कि शंकर का कोई इतना पार्ट ही नही है। और चित्र जैसे कि अनेक प्रकार के बनाये है वैसे ही शंकर का चित्र भी बनाया है। विष्णु और ब्रह्मा ठीक अर्थ सहित बना हुआ है। ऐक्ट मे आते है 84 जन्मो की। शंकर ऐक्ट मे नही आते है। यह क्या करते है वास्तव मे उनका कर्तव्य कोई है ही नही। परन्तु भक्ति मार्ग मे जैसे कि और चित्र बनाये है वैसे ही शंकर का भी बनाया है। अर्थ कुछ है नही। बाप बैठ समझाते है कि यह सब रांग है। भक्ति मार्ग मे कितने मनोमय चित्र बनाये है। अर्थ कुछ भी है नही। ऐसे भी नही है कि शंकर प्रेरना करता है। बाबा ने समझाया है कि प्रेरणा का कोई अर्थ नही होता है। शंकर की कोई ऐक्ट नही है। तुम इन बातो को समझ सकते हो। चार भुजायें दो टांगें ऐसे कोई मनुष्य होते नही है। यह ल-न का युगल रूप है। ब्रह्मा स्थापना करते है। फिर ल-न बन कर पालना करते है। विष्णु चार भुजाओं वाला ऐसा कोई होता नही है। यह सब है भक्ति मार्ग के बनाये हुये चित्र। बाप बैठ कर सब राज़ समझाते है। कि ल-न का रूप सूक्ष्म वतन मे देखने मे नही आता है। विष्णु को देख कर क्या करेंगे। मूंझ जावेंगे। विष्णु को जाकर दिखलाते हो? विष्णु को सूक्ष्म वतन मे देखते हो? (नही) तो फिर उनको सूक्ष्म वतन मे क्यों दिखाते है। तुम बाबा को देखते हो वो पार्ट बजाते है। विष्णु को शंकर को देखते हो? (नही) विष्णु सूक्ष्म वतन मे तब क्या करते है? विष्णु क्या है? बहुत चित्र है जिनमे तो कोई भी अर्थ नही है। समझानी दे देकर उनको भी उडा देंगे। शिव शंकर इकठा कहाँ देखेंगे। सूक्ष्म वतन मे शंकर नही है, बैल नही है। सो वहाँ पर होता नही है। फिर कैसे कहेंगे कि सूक्ष्म वतन मे शंकर होता है। उनका तो कोई पार्ट है नही! चित्र बनाते है तो बाबा समझाते है कि यह विनाश कराते है, यह प्रेरक है। परन्तु तुम जानते हो कि वो साईस सीख रहे है! तुम्हारे लिये विनाश जरूर होना ही है। शंकर क्या करते है? अभी तुम ब्राह्मण पढते हो। सतयुग मे है प्रवृती मार्ग। कलयुग में अपवित्र प्रवृती मार्ग। इस समय तुम समझते हो कि प्रवृती मार्ग सारा खत्म हो जाना है। तुम इनसे भी अलग हो जाते हो। हम आत्मा ये बाप को याद करते है। सभी बच्चे ही बच्चे पढ रहे है। तुम तो वास्तव मे सभी स्टुडण्ट हो। प्रवृती मार्ग तुमने खतम कर लिया है। लोक लाज आद कुल की मर्यादा आद सब कुछ छोड दी। सब बातों से तुम उपराम होते रहते हो। हम आत्मा है हमको शरीर को छोड कर घर जाना है। प्रवृती मार्ग को भुल जाना है। जो कुछ भी है उनको भूल जाना है। अब बाप से योग लगाते है। तुम्हारा कनैक्शन बाप से है। बाप कहते है कि पुरानी दुनियाँ को भूल कर मुझे याद करो। अपने को देह से न्यारा समझो अविनाशी बाप को याद करो और सब कुछ भूल जाना है। सिवाय बाप के और कोई चीज याद नही आवे। यह ज्ञान अभी तुमको ही मिलता है। फिर प्रालब्ध जाकर भविष्य मे भोगेंगे। जैसे-2 पढेंगे उसी अनुसार आकर पद पावेंगे। यह ज्ञान की बातें बुधी मे रहती है। ड्रामा मे नूंध है। आत्मा मे अविनाशी पार्ट है। तुम्हारी तो है याद की योग की यात्रा। यहाँ पर से तुम राजाई के संस्कार ले जाते हो। फिर इस पढाई का पार्ट खत्म हो जावेगा। आत्मा को तो सारा पता होना चाहिये ना। तुम सभी अपने-2 पार्ट को जानते हो। बाप कहते है कि देह को भूल जाना है। फिर पढाई बन्द हो जावेगी। बाबा तो चले ही जावेंगे। साथ-2 मे तुमको भी ले जावेंगे फिर पढाई होगी बन्द। फिर आत्मा शान्तिधाम मे चली जावेगी। फिर पढाई अनुसार ही अपना पार्ट आकर रिपीट करेंगे। यह चक्र समझ कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। कितने ढेरों बच्चे है। तुम टीचर बन कर कितनो को पढाते हो। फिर कोई तो टीचर बनते है कोई बनते ही नही है। ना बनने वाले तो फिर कम पद ही पाते है। अब तो बहुत ढेर के ढेर टीचर बनेंगे। जो टीचर नही बनेंगे वो कम पद पावेंगे। अच्छा हर प्रकार के वैरायटी फ्लावर बनने वाले बच्चों को फूल बनाने वाले बेहद के रूहानी बाप बापदादा वो मात-पिता का बहुत-2 यादप्यार और स्वीट गुड नाईट